आजीविका में उतार-चढ़ाव

अर्चना अग्रवाल

व्यवसाय एक विस्तृत क्षेत्र है। अनेक वर्षों के अनुभव और रिसर्च के आधार पर कुछ बिंदु संकलित किए गये हैं, जिन पर इस लेख के माध्यम से प्रकाश डालने की कोशिश की गयी है।

किसी का कोई भी आजीविका का साधन हो – डॉक्टर, वकील, व्यवसायी, दुकानदार, या सरकारी कर्मचारी, सभी अपने कैरियर में उतार–चढ़ाव देखते हैं। मनचाहा ट्रांसफर न होना, काम बदलना, नौकरी न मिलना, व्यवसाय में हानि के कारण नए व्यवसाय में लगना आदि एक प्रकार से कैरियर में उतार–चढ़ाव ही हैं। इन स्थितियों में मनुष्य सोचता है कि क्या मैं इस स्थिति से निकाल पाऊंगा या नहीं?

इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होने के मुख्य कारण निम्न हैं :

• कर्म कारक ग्रह शनि और बृहस्पति का 1/7 स्थिति, युति, 3/11 स्थिति या 5/9 स्थिति श्रेष्ठ है। ऐसे में व्यक्ति का कैरियर संभला रहता है। जबकि 2/12 और 6/8 स्थिति बहुत संघर्ष करवाती है।

• शनि और केतु यदि परस्पर त्रिकोण में हों तब व्यवसाय में या नौकरी में बदलाव आते हैं। इसमें जब गोचर का शनि जन्म कुंडली के केतु पर से गोचर करता है, तब जातक स्वेच्छा से नौकरी बदलता है। लेकिन जब गोचर का केतु जन्म कुंडली के शनि पर से गोचर करता है, तब जातक दबाब के कारण या तो नौकरी छोड़ देता है या उसे निकाल दिया जाता है।

• शनि और चंद्र का स्थान परिवर्तन हो, तो स्थानांतरण या आजीविका के स्थान बदलता है।

• शनि और राहु के योग से जातक कम स्तर के पद पर नियुक्ति पाता है और यदि व्यवसाय है तो जातक को स्वयं के बलबूते पर ही शुरुआत करता है, उसे पिता से किसी अन्य से आरंभ में कुछ प्राप्त नहीं होता।

• शनि और शुक्र से धन योग निर्मित होता है।

• शनि का संबंध जितने ग्रहों से बनेगा, उसी प्रकार से हमें आकलन करना होता है।

• जब भी आजीविका में कोई बदलाव आ रहा है, तो हमें गोचर में शनि और दशमेश की स्थिति देखनी चाहिए। यदि यह स्थिति अच्छी है, तो बदलाव करने की सलाह देनी चाहिए, अन्यथा धैर्य से इन्तजार करने की सलाह देनी चाहिए।

उदहारण – उच्च श्रेणी के व्यवसायी की कुंडलियों में शनि और बृहस्पति की स्थिति

- बिल गेट्स = 3/11
- वारेन बुफ्फेट = 1/7
- धीरुभाई अम्बानी = 5/9
- भाई मनमोहन सिंह = 3/11
- अमिताभ बच्चन = 3/11

उदाहारण : 1–सितम्बर–1971, 00 20, दिल्ली

लग्न कुंडली में आजीविका की स्थिति के लिए कर्म कारक ग्रह शनि का संबंध अन्य ग्रहों, भावों और राशियों से देखते हैं :

– शनि केंद्र में शुक्र की राशि में है। शुक्र–शनि का संबंध धन योग निर्मित करती है।

– शनि से केंद्र में मंगल और राहु भी है। शनि–मंगल की स्थिति कार्यस्थल पर अन्य सदस्यों के साथ परेशानी दिखाता है, जैसे उच्च अधिकारी बहुत कठोर हो। शनि–राहु की स्थिति से यह पता चलता है कि इन्होने नौकरी निम्न स्तर से आरंभ की होगी।

– शनि–बृहस्पति का 1/7 का संबंध आजीविका संबंधित बल प्रदान करता है जिससे जातक आजीविका संबंधित उतार–चढ़ाव को पार कर लेता है और इनका नियमित आय का साधन आजीवन रहता है। जब–जब गोचर में शनि–बृहस्पति का संबंध जन्मकालिक शनि–बृहस्पति से बनेगा, तब–तब इनका भाग्य उदय होगा।

– जब कर्म कारक शनि का मंगल या

राहु संबंध बनेगा, तब–तब कार्यस्थल पर परेशानी आएगी।

1993 में जब जातक की पहली नौकरी लगी, तब गोचर का शनि 10वें भाव में स्वराशि होकर शुक्र–सूर्य–बुध से सम्बन्ध बना रहा था। अतः इनको सरकारी नौकरी मिली। 14–मई–1993 की गोचर कुंडली निम्न है :

1997 में इन्होंने सरकारी नौकरी होते हुए भी सोचा कि अपना व्यवसाय आरंभ किया जाए। 10–जनवरी–1997 की गोचर कुंडली निम्न है :

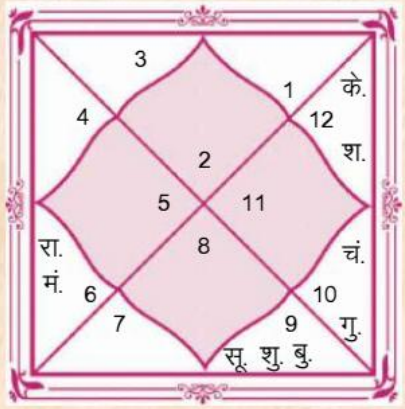

जातक ने अच्छे निवेश के साथ कपड़े का व्यवसाय शुरू किया, परंतु गोचर में शनि और केतु 8 डिग्री के थे और जन्म कुंडली के 19 डिग्री के केतु से त्रिकोण में थे। जब गोचर का शनि 19 डिग्री पर आया, तब इनका काम बंद हो गया। भारी नुकसान भी हुआ, लेकिन शनि–बृहस्पति के 1/7 संबंध ने इनकी नौकरी नहीं जाने दी और नियमित आय बनी रही। इनकी जन्मकुंडली में शनि–केतु का कोई सम्बन्ध नहीं था, इसलिए भी जॉब जाते जाते बची।

अब जब 2023 में शनि फिर से स्वराशि होकर दशम में आएंगे, तो वह समय इनके लिए बहुत ही उत्तम समय होगा।

उदाहरण : 26–जून–1980, 00–50, मुंबई, महाराष्ट्र

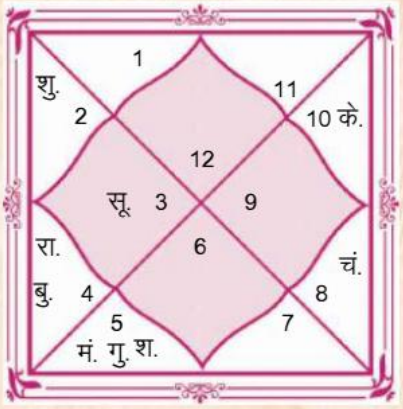

मीन लग्न और वृश्चिक राशि की कुंडली में कर्मकारक शनि द्वादशेश होकर जन्मस्थान (लग्न) से दूर जाकर भाग्य उदय दर्शाता है।

– शनि बृहस्पति की युति है, अतरू नियमित रहेगी। उतार–चढ़ाव आएंगे तो उन्हें सहन भी कर लेंगे।

– शनि–मंगल की युति, अर्थात् सह–कर्मचारियों से परेशानी होगी।

– शनि सूर्य की राशि में और सूर्य के नक्षत्र में हैं।

जताक ने 12वीं कक्षा तक पढाई की और फिर अपने भाई के साथ मंदिर के काम में आ गए। 26 वर्ष में विवाह हुआ, परिवार में विभाजन में हुआ और इन्होने किराए की दुकान शुरू की। कुछ समय बाद इन्होने एक फैक्ट्री लगाई, परन्तु मजदूरों से परेशान होकर बंद करनी पड़ी।

7–मार्च–2016 की गोचर कुंडली निम्न है। इस दिन इन्होंने अपनी दुकान अपने छोटे भाई को दे दी और नई शुरुआत की।

गोचर में बृहस्पति ने जन्मकुंडली के शनि–मंगल–बृहस्पति से संबंध बनाया है, अर्थात् भाग्योदय के लिए अच्छा समय है। गोचर में शनि लगभग 22 डिग्री का है और वह लगभग 8 महीने में जब दशम में आएगा, तब वह जन्मकालिक शनि और बृहस्पति से त्रिकोणीय सम्बन्ध बनाएगा। जातक का व्यवसाय लगभग 8 महीने धीरे चला, परन्तु उसके बाद से अब तक इन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। जैसे ही गोचर का शनि मकर राशि में प्रवेश किया उसने जन्मकालिक शुक्र से संबंध बनाया जो धनयोग भी निर्मित हो गया। अब इनका व्यापार दिल्ली से बाहर भी है और बड़ी फर्नीचर मार्केट में इनका होलसेल का शोरूम है।

अर्थात् हम कह सकते है कि व्यवसाय या नौकरी में आने वाले अच्छे–बुरे समय को ग्रह स्थिति के अनुसार समझकर हम अपने प्रयासों को सही दिशा दे सकते हैं।

पता : A–7, GF, सुभाष पार्क
उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059
फोन – 9871063439